Spiritual Gyan

Bhagavad Gita Chapter 3 Shloka 18

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन |
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रय: || 18 ||

अर्थात भगवान कहते हैं, उस महापुरुष (जिसने कर्मयोग प्राप्त कर लिया है) का इस संसार में न तो कर्म करने से, न कर्म न करने से कोई प्रयोजन रहता है और न ही उसका किसी भी प्राणी से किंचित मात्र भी स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध रहता है।

1. क्या हर कर्म अपने लिए करना ही अशांति का कारण है?

(नैव तस्य कृतेनार्थो)

- मनुष्य की कर्म प्रवृत्ति सांसारिक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए होती है, जिससे वह इच्छाओं में बंध जाता है।
- **कर्म के दो प्रकार:**
    1. कामना पूर्ति के लिए (सामान्य व्यक्ति)
    2. कामना निरोध के लिए (कर्मयोगी)
- कर्मयोगी निःस्वार्थ भाव से संसार के हित के लिए कर्म करता है। उसे अनुभव होता है कि शरीर, इंद्रियाँ आदि संसार के हैं, अतः कर्म भी संसार के लिए ही होने चाहिए।

2. क्या कर्म से बचने की प्रवृत्ति ही दुःख का कारण है?

(नाकृतेनेह कश्चन)

- आलस्य या प्रमाद में रुचि रखने वाला व्यक्ति कर्म नहीं करना चाहता, परंतु कर्मयोगी सात्विक भोगों से भी परे होता है।
- उसका शरीर से कोई संबंध नहीं होता, अतः आलस्य में रुचि नहीं रखता।

3. क्या सच्चे कर्मयोगी को कर्तव्य निभाने की आवश्यकता होती है?

(न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः)

- कर्मयोगी के सभी कार्य स्वतः संसार के हित में होते हैं, जैसे शरीर के अंग स्वतः शरीर के हित में कार्य करते हैं।
- जब तक मनुष्य में पाने की इच्छा या मरने का भय है, तब तक वह कर्तव्य के प्रति उत्तरदायी है। किंतु कर्मयोगी बिना प्रयोजन के भी आदर्श कर्म करता है।

Spiritual Gyan